

डॉ. डेविड बाउर, आगमनात्मक बाइबिल अध्ययन, व्याख्यान 8, पुस्तक सर्वेक्षण, जूड

© 2024 डेविड बाउर और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. डेविड बोवर आगमनात्मक बाइबल अध्ययन पर अपने शिक्षण में हैं। यह सत्र 8 है, पुस्तक सर्वेक्षण, जूड।

जैसा कि मैंने पहले उल्लेख किया है, हमने इस खंड को इस नए खंड में तोड़ दिया है।

हम जूड के पत्र को पुस्तक सर्वेक्षण के नमूने के रूप में उपयोग करना चाहते हैं। एक अर्थ में, यह भी है, यह भी होगा, यह खंड सर्वेक्षण के नमूने के रूप में भी काम कर सकता है, लेकिन यह निश्चित रूप से एक चीज़ के लिए अधिक प्रबंधनीय लंबाई का है। तो, और निश्चित रूप से, बल्कि स्पष्ट रूप से, चूंकि हमारे यहां केवल एक अध्याय है, अध्याय शीर्षकों के बजाय, हम उन पैराग्राफों को शीर्षक देंगे जो हमारे पास हैं।

मैं यहां अभी उल्लिखित संशोधित मानक संस्करण पर काम कर रहा हूं, जिसे मैं अध्ययन उद्देश्यों के लिए एक बहुत ही योग्य अनुवाद मानता हूं। यह शायद इनमें से एक है, यह शायद अंग्रेजी में मानक अनुवाद के सबसे करीब है। हालाँकि, आरएसवी, निश्चित रूप से, उदाहरण के लिए, एनआईवी के रूप में लगभग उतनी प्रतियां नहीं बेचता है, यह किंग जेम्स संस्करण, 1611 के अधिकृत संस्करण, 1901 के अमेरिकी संशोधित संस्करण के माध्यम से अनुवाद में एक सीधी रेखा में खड़ा है। .

और फिर, निश्चित रूप से, आपके पास संशोधित मानक संस्करण है जो 1948 में नए टेस्टामेंट में और 1952 में पुराने टेस्टामेंट में आया था। और फिर उसके बाद, निश्चित रूप से, आपके पास एनआरएसवी है, नया संशोधित मानक संस्करण जो बाद में बाहर आया। ईएसवी, अंग्रेजी मानक संस्करण मूलतः आरएसवी है।

जैसा कि वे ईएसवी के परिचय में स्पष्ट रूप से कहते हैं, यह मूल रूप से आरएसवी है जिसमें यहां और वहां केवल कुछ बदलाव हैं जो ईएसवी के संपादकों की धार्मिक प्रतिबद्धताओं या दृढ़ विश्वासों को दर्शाते हैं। लेकिन आरएसवी के संबंध में एक बात जो मुझे पसंद है वह यह है कि यह वास्तव में अनुवाद सिद्धांत के दो चरम सीमाओं के बीच मध्यस्थ की स्थिति लेता है। एक ओर, अनुवाद में वास्तव में एक प्रकार की सातत्यता शामिल होती है। अनुवाद सिद्धांत के एक छोर पर, हमारे पास वह है जिसे कभी-कभी औपचारिक तुल्यता के रूप में जाना जाता है, या मुझे कहना चाहिए, कुछ औपचारिक या मौखिक तुल्यता या ऐसा ही कुछ, जो वास्तव में शब्द-दर-शब्द प्रकार के अनुवाद से संबंधित है, जहां अनुवादक इस अंग्रेजी शब्द के लिए बिल्कुल सही ग्रीक या हिब्रू शब्द या इसी तरह के ग्रीक या हिब्रू शब्द को खोजने का प्रयास करते हैं।

इसे कभी-कभी अपमानजनक रूप से लकड़ी का अनुवाद या शायद शाब्दिक अनुवाद भी कहा जाता है। इसका सबसे अच्छा उदाहरण शायद न्यू अमेरिकन स्टैंडर्ड बाइबल है। इसका सबसे

चरम उदाहरण एम्प्लीफाइड बाइबिल है, जहां वे केवल एक शब्द की पहचान करने से संतुष्ट नहीं होते हैं जो ग्रीक या हिब्रू शब्द का प्रतिनिधित्व करता है, बल्कि अक्सर एक संपूर्ण कोष्ठक होता है जिसमें कई शब्द होते हैं जो एक साथ कैप्चर करने के लिए होते हैं प्रयुक्त ग्रीक या हिब्रू शब्द का सटीक विचार।

इस सातत्य के दूसरे छोर पर, हमारे पास वह है जिसे कभी-कभी गतिशील तुल्यता कहा जाता है। और यहां विचार यह है कि अनुवाद में सबसे अच्छे अंग्रेजी शब्द की पहचान करना शामिल नहीं है जो ग्रीक या हिब्रू शब्द से मेल खाता है बल्कि वास्तव में विचार की संपूर्ण इकाइयों का अनुवाद करना है। तो, पूरे वाक्य या यहां तक कि पूरे पैराग्राफ के अर्थ या विचार को समझना, और फिर उस वाक्य या उस पैराग्राफ के अर्थ को अंग्रेजी में अनुवाद करना।

इसका प्रतिनिधित्व अमेरिकन बाइबल सोसाइटी, या यूनाइटेड बाइबल सोसाइटीज़ से आने वाले प्रत्येक अनुवाद द्वारा किया जाता है। और चरम उदाहरण व्याख्या होगी. पैराफ्रेज़ गतिशील तुल्यता का एक चरम उदाहरण है।

अब, मुझे लगता है कि आरएसवी का महत्व यह है कि यह इन दोनों के बीच एक मध्यस्थ स्थिति का चार्ट बनाना चाहता है। दूसरे शब्दों में, यह या तो मौखिक तुल्यता या गतिशील तुल्यता के लिए प्रतिबद्ध नहीं है, बल्कि इस दिशा में आगे बढ़ना है या व्यक्तिगत अंशों की अनुवाद मांगों के आधार पर अनुवाद संबंधी निर्णय लेता है। इसलिए, यह अधिक उदार है, और हम इसे अनुवाद सिद्धांत के अनुप्रयोग के संदर्भ में अधिक, अधिक आगमनात्मक कह सकते हैं।

एनआईवी, कुछ स्थानों पर, अधिक होने की प्रवृत्ति रखता है, इस दिशा में आगे बढ़ने की प्रवृत्ति रखता है, और अन्य स्थानों पर, इस आधार पर कुछ मात्रा में इस दिशा में आगे बढ़ने की प्रवृत्ति रखता है कि इसके विभिन्न भागों के अनुवाद के लिए कौन जिम्मेदार था। बाइबिल. लेकिन मैं, स्वयं, कम से कम, एनआईवी में गतिशील तुल्यता या मौखिक तुल्यता की ओर बढ़ने के संबंध में उस तरह की सावधानीपूर्वक सोच नहीं देखता जो मुझे आरएसवी में मिलती है। अब, आरएसवी को पकड़ना अधिक कठिन है, खासकर जब से आपके पास एनआरएसवी का उत्पादन होता है।

लेकिन अगर आपको आरएसवी हासिल करना मुश्किल लगता है, तो आप ईएसवी आजमा सकते हैं। जैसा कि मैं कहता हूं, अधिकांश भाग के लिए, यह अनिवार्य रूप से आरएसवी है। एनआरएसवी आम तौर पर एक अच्छा अनुवाद है, लेकिन मैं इसका उपयोग नहीं कर रहा हूं क्योंकि मैंने वास्तव में पाया है कि एनआरएसवी ने कम से कम उतनी ही समस्याएं पेश की हैं जितनी उसने अनुवाद में हल करने का प्रयास किया था।

तो, ऐसे स्थान हैं जहां यह वास्तव में आरएसवी में सुधार करता है, लेकिन मुझे कई और मामले मिले जहां यह वास्तव में परिचय देता है, और कभी-कभी बेवजह अनुवाद समस्याओं का परिचय देता है। तो, इसी कारण से, मैं अभी भी आरएसवी का उपयोग करना पसंद करता हूं। लेकिन आरएसवी के संबंध में एक बात यह है कि, आप जानते हैं, जब मनुष्यों की बात आती है तो यह लिंग-समावेशी नहीं है।

और इसलिए, यह अभी भी मनुष्य या मानवजाति या इस तरह की चीज़ के बारे में बात करता है। और, निःसंदेह, मैं इस बात को लेकर संवेदनशील हूँ कि महिलाएं इस तरह की भाषा से कैसे अलग महसूस कर सकती हैं। तो, आपको यह जानना होगा कि अनुवाद एकदम सही है, और मैं मूल्य के कारण इसके साथ रहता हूँ, अन्यथा, एक मूल्य जो मुझे आरएसवी में मिलता है।

लेकिन किसी भी दर पर, आरएसवी में पैराग्राफ को इंडेंटेशन द्वारा दर्शाया गया है। तो, जहां आपके पास इंडेंटेशन है, आपके पास एक नया पैराग्राफ है, और यही इन पैराग्राफों, इन पैराग्राफ शीर्षकों का आधार है। अब, एक पत्र होने के नाते, यहूदा का पत्र, निस्संदेह, वैचारिक सामान्य सामग्री है।

प्राथमिक चिंता विचारों की प्रस्तुति है। उदाहरण के लिए, निश्चित रूप से, आपके पास यहां उल्लिखित कुछ लोग हैं, जिनमें हनोक भी शामिल है। लेकिन किताब उनके बारे में नहीं है।

पुस्तक वास्तव में विचारों के बारे में है, और इन व्यक्तियों का उल्लेख किया गया है, स्थानों का उल्लेख किया गया है, और घटनाओं का उल्लेख इस बात की सेवा में किया गया है कि वास्तव में पुस्तक की सामग्री की प्राथमिक चिंता क्या है, जो कि विचारों की प्रस्तुति है। अब, मुख्य इकाइयों और उपइकाइयों के संदर्भ में, हम फिर से पीछे खड़े होकर इन्हें बनाना चाहते हैं। इन इकाइयों और उपइकाइयों को उतना व्यापक बनाना महत्वपूर्ण है जितना सामग्री अनुमति देती है। पुस्तक सर्वेक्षण में, आप विवरणों में फंसने से बचना चाहेंगे क्योंकि जितना अधिक आप विवरणों पर ध्यान केंद्रित करेंगे, आप पुस्तक के व्यापक, व्यापक आंदोलन पर ध्यान केंद्रित करने में उतना ही कम सक्षम होंगे।

तो, आप चाहते हैं, आप विवरणों पर ध्यान केंद्रित नहीं करना चाहते हैं, बल्कि पीछे खड़े होकर पुस्तक के व्यापक, व्यापक आंदोलन को समझना चाहते हैं। और यह वास्तव में आपकी इकाइयों और उप-इकाइयों को सामग्री की अनुमति के अनुसार व्यापक बनाने में तब्दील हो जाता है। मेरे निर्णय में, हम यहां पद एक और दो में अभिवादन से आरंभ करते हैं।

यहूदा, यीशु मसीह का उपदेश और याकूब का भाई, उन लोगों के लिए जो बुलाए गए हैं, परमपिता परमेश्वर में प्रिय हैं, और यीशु मसीह के लिए सुरक्षित हैं, दया, शांति और प्रेम आप पर बहुतायत से हो। और फिर, निःसंदेह, पत्र का मुख्य भाग श्लोक तीन से शुरू होता है, और हमें श्लोक 24 और 25 में पत्र का निष्कर्ष मिलता प्रतीत होता है। अब, उसके लिए जो आपको गिरने से बचाने में सक्षम है और आपको बिना किसी दोष के सामने प्रस्तुत करने में सक्षम है। आनन्द के साथ उसकी महिमा की उपस्थिति, हमारे प्रभु यीशु मसीह के माध्यम से हमारे एकमात्र उद्धारकर्ता परमेश्वर की महिमा, महिमा, प्रभुत्व, और अधिकार सभी समय से पहले और अब और हमेशा के लिए हो।

तथास्तु। तो, स्पष्ट रूप से, यही निष्कर्ष है। तो, हमारे पास परिचय और निष्कर्ष है, और फिर, श्लोक तीन से 23 तक पत्र का मुख्य भाग होगा।

अब, मैं स्वयं देखता हूँ, जैसे ही मैं पीछे खड़ा होता हूँ और व्यापक, व्यापक आंदोलन का एहसास करता हूँ, मैं स्वयं यहां श्लोक चार और पाँच के बीच प्रमुख विराम देखता हूँ। श्लोक तीन और चार में, हमारे पास वास्तव में वह है जिसे हम इस पत्र की एक प्रकार की घोषणा के रूप में संदर्भित कर सकते हैं। प्रिय, हमारे सामान्य उद्धार के बारे में आपको लिखने के लिए बहुत उत्सुक होने के कारण, मुझे उस विश्वास के लिए संघर्ष करने की अपील करते हुए लिखना आवश्यक लगा जो एक बार और सभी के लिए संतों को दिया गया था।

क्योंकि प्रवेश गुप्त रूप से कुछ लोगों द्वारा प्राप्त किया गया है जो बहुत पहले से इस निंदा के लिए अधर्मी व्यक्ति नामित किए गए थे जो हमारे भगवान की कृपा को व्यभिचार में बदल देते हैं और हमारे एकमात्र स्वामी और प्रभु यीशु मसीह का इनकार करते हैं। आप देखिए, इसका मतलब यह है कि यह अवसर और पत्र के सामान्य विवरण की ओर इशारा करता है। किस अवसर पर पत्र, बल्कि पत्र का संदेश भी यहां सामान्य रूप से प्रस्तुत किया गया है।

तो, आपके पास यहां श्लोक तीन और चार के विखंडन के संदर्भ में, ये श्लोक तीन और चार के भीतर उपडकाइयाँ होंगी, मूल उद्देश्य, जो हमारे सामान्य उद्धार के बारे में लिखना था, और फिर वर्तमान चिंता, जो कि है उस विश्वास के लिए संघर्ष करने की अपील जो एक ही बार संतों को सौंपी गई थी, और उस अपील का कारण। श्लोक चार, यहां ध्यान दें कि आपके पास वह स्पष्ट पुष्टि है। क्योंकि प्रवेश गुप्त रूप से कुछ लोगों द्वारा प्राप्त किया गया है जो बहुत पहले से इस निंदा के लिए अधर्मी व्यक्ति नामित किए गए थे जो हमारे भगवान की कृपा को व्यभिचार में बदल देते हैं और हमारे एकमात्र स्वामी और प्रभु यीशु मसीह का इनकार करते हैं।

अब, जब आप श्लोक पाँच से 23 तक आते हैं, तो मैंने इसे एक लेबल, पता दिया है। विवरण, विशेष रूप से उपद्रवियों का वर्णन और अपील कि इन उपद्रवियों की उपस्थिति में क्या करना चाहिए, उस अपील में दया की भूमिका पर जोर दिया गया है। अब, आप देखेंगे कि श्लोक तीन और चार में सामान्य कथन में, वह श्लोक 3बी में, यह कहकर शुरू करता है कि वह उन्हें विश्वास के लिए लड़ने की अपील करने के लिए लिखता है, उनसे उस विश्वास के लिए लड़ने की अपील करता है जो एक बार सभी के लिए संतों को सौंप दिया गया था।

फिर वह इस अपील का कारण बताता है, जो कि अधर्मियों की स्वीकृति थी। अब, ध्यान दें कि जब पते की बात आती है, तो वह आदेश को उलट देता है। वह अधर्मियों के वर्णन से शुरू होता है, श्लोक पाँच से 16 तक अधर्मियों की स्वीकृति के साथ, और फिर श्लोक 17 से 23 में शरीर के अंत में, आपके पास विश्वास के लिए लड़ने के लिए उनसे अपील की विशिष्टताएँ हैं, जो एक ही बार में पवित्र लोगों को सौंप दिया गया।

हम इस पर वापस आने जा रहे हैं, लेकिन जाहिर है, मुझे लगता है कि आप देख पाएंगे कि आपके यहां चियास्म की व्यवस्था है। वह सामान्य कथन में, विश्वास के लिए संघर्ष करने की अपील करता है, और फिर कारण, अधर्मी की स्वीकृति, और फिर उस पते के संदर्भ में जहां वह आगे बढ़ता है और इसे विकसित करता है, इसे विशिष्ट बनाता है, वह अधर्मी की स्वीकृति के साथ शुरू करता है, बी प्राइम, और फिर आस्था के लिए संघर्ष करने की अपील के साथ समाप्त होता है, ए प्राइम। ए, बी, बी प्राइम, ए प्राइम।

अब, फिर से, उपइकाइयाँ जो हमारे पते में हैं, जो श्लोक पाँच से 23 में पाई जाती हैं, उपइकाइयाँ, निश्चित रूप से, श्लोक पाँच से 16 में पाई जाती हैं, उपद्रवियों का वर्णन, ये अधर्मी, और फिर 17 से 23 तक, छंद 17 से 23 में पाठकों के लिए उपदेश या अपील। अब, इकाइयों और उपइकाइयों की पहचान करने के संदर्भ में आपको वास्तव में यहीं तक जाने की आवश्यकता होगी। मैं वास्तव में, क्योंकि यह बहुत छोटा है, मैं वास्तव में, और जो कुछ चल रहा था उसमें मेरी दिलचस्पी थी, मैं यहां उप-इकाइयों के भीतर भी इकाइयों की पहचान करने के मामले में थोड़ा आगे बढ़ गया।

श्लोकों में, श्लोक पाँच से 16 की तरह, हमारे पास यह पुष्टि है कि ईश्वर अधर्मियों का न्याय करेगा, जो श्लोक पाँच से सात में पिछले उदाहरणों द्वारा स्थापित किया गया है। और फिर, श्लोक आठ से 13 तक, आपके पास योग्यता है। ईश्वरीय वे हैं जो तुम्हारे बीच उपद्रव मचा रहे हैं।

वे अधर्मी हैं और इसलिए, दैवीय न्याय के पात्र हैं। फिर वह फिर से प्रतिज्ञान पर वापस जाता है: भगवान यहां भविष्यवाणी द्वारा स्थापित अधर्मियों का न्याय करेंगे, छंद 14 से 16। इसलिए, यह इस पुष्टि के साथ शुरू और समाप्त होता है कि भगवान पिछले उदाहरणों, छंद पांच से सात तक स्थापित अधर्मियों का न्याय करेंगे, और पिछली भविष्यवाणी, श्लोक 14 से 16 द्वारा स्थापित।

और इन सबके बीच, वह वास्तव में कहता है कि जो लोग आपके बीच आए हैं वे अधर्मी हैं और दैवीय न्याय के पात्र हैं, वे अतीत में अधर्मियों की तरह हैं, और उस निर्णय के समान निर्णय के पात्र हैं जो अतीत में अधर्मियों पर घोषित किया गया था, दोनों द्वारा पिछले उदाहरणों और पिछली भविष्यवाणी से। और फिर, निस्संदेह, श्लोक 17 से 23 में, वे कहते हैं, आपको श्लोक 17 में इसे याद रखना चाहिए, जो वास्तव में दो प्रकार के उपदेशों का परिचय देता है। याद रखने का उपदेश, श्लोक 17 से 19, जो फिर दूसरे उपदेश की ओर ले जाता है, कार्य करने का उपदेश, एक ओर स्वयं के लिए कार्य करने के लिए, श्लोक 20 और 21, और दूसरों के लिए, श्लोक 22 और श्लोक 23.

अब, फिर से, श्लोक पाँच से 16 के संबंध में, आपने श्लोक पाँच से 16 में जिस बात पर जोर दिया है वह अधर्मियों पर न्याय की निश्चितता है। दोनों श्लोक पाँच से सात और श्लोक 14 से 16 में, वह निर्णय की निश्चितता के लिए बहस करने के लिए पूर्व-ईसाई रहस्योद्घाटन की अपील करता है। फिर दो चिंताएँ हैं, ईश्वर अधर्मियों का न्याय करेगा और अधर्मी जो दैवीय न्याय के पात्र हैं, उन्हें चर्च में प्रवेश मिल गया है।

यही वह बिंदु है जो वह दूसरा बिंदु बनाते हैं, विशेष रूप से छंद आठ से 13 में। अब, छंद 17 से 23 में आपके पास जो है, वह प्रेरितिक रहस्योद्घाटन की ओर एक आंदोलन है, जबकि छंद पांच से 16 में ध्यान पूर्व-पर है। पुराने नियम की कहानियों का उपयोग करते हुए ईसाई रहस्योद्घाटन, और वास्तव में, विशेष रूप से पुराने नियम से और पुराने नियम की भविष्यवाणी मुख्य रूप से, निश्चित रूप से पूर्व-ईसाई रहस्योद्घाटन। श्लोक 17 से 23 में वह जो करता है वह वहां प्रेरितिक रहस्योद्घाटन के लिए अपील करना है।

तो, वह पद 17 में कहते हैं, परन्तु हे प्रियों, तुम्हें हमारे प्रभु यीशु मसीह के प्रेरितों की भविष्यवाणियों को स्मरण रखना चाहिए। उन्होंने तुम से कहा, अन्तिम समय में अपने ही अधर्मी अभिलाषाओं के अनुसार ठट्टा करनेवाले होंगे। और फिर वह आगे बढ़कर कहता है, यही तो फूट डालते हैं, हे सांसारिक लोग, जो आत्मा से रहित हैं, परन्तु हे प्रियों, अपने परम पवित्र विश्वास पर दृढ़ हो जाओ, पवित्र आत्मा से प्रार्थना करो, और परमेश्वर के प्रेम में बने रहो।, अनन्त जीवन के लिए हमारे प्रभु यीशु मसीह की दया की प्रतीक्षा करें, जैसा कि वे कहते हैं, यह स्वयं के लिए कार्य करने और फिर दूसरों के लिए कार्य करने का उपदेश है, और, छंद 22 और 23, और कुछ लोगों को समझाएं जो संदेह करते हैं, कुछ को बचाएं और उन्हें आग में से झपट लो, कितनों पर भय के साथ दया करो, और उस वस्त्र से भी घृणा करो जिस पर शरीर का दाग लगा हो।

तो, यहाँ पैमाने के अनुसार एक चार्ट पर खींची गई मुख्य इकाइयाँ और उपइकाइयाँ हैं। तो फिर, आपको यहां यह समझ में आता है कि वह यहां पाठकों को दिए गए उपदेशों की तुलना में उपद्रवियों के वर्णन में अधिक स्थान, अधिक आलोचनात्मक द्रव्यमान देता है। हालाँकि, जैसा कि हम देखेंगे, यह संरचनात्मक संबंधों के संदर्भ में बहुत अच्छी तरह से हो सकता है कि पुस्तक यहां पाठकों के लिए उपदेश में चरमोत्कर्ष पर आती है।

इसलिए, यद्यपि वह अधर्मियों के वर्णन और आने वाले अधर्मियों के निर्णय को अधिक स्थान देता है, यह सब वास्तव में यहां पाठकों के लिए उपदेश के एक उच्च बिंदु की ओर बढ़ रहा है। वैसे, यह हमें याद दिलाता है कि यह जरूरी नहीं है कि लेखक उस चीज़ को सबसे महत्वपूर्ण मानता है जिसके साथ वह सबसे अधिक समय बिताता है। ऐसे अन्य कारण भी हो सकते हैं कि वह क्यों अधिक स्थान, अधिक आलोचनात्मक ध्यान, अर्थात् आलोचनात्मक द्रव्यमान के संदर्भ में, एक विषय पर दूसरे विषय पर अधिक ध्यान देता है।

हम आवश्यक रूप से हर मामले में यह निष्कर्ष नहीं निकाल सकते कि इसका मतलब यह है कि उसके लिए वह सबसे अधिक या अधिक महत्वपूर्ण चीज़ है। इसके और भी कारण हो सकते हैं। अब, संरचनात्मक रिश्तों के संदर्भ में, प्रमुख संरचनात्मक रिश्ते, निश्चित रूप से, श्लोक एक और दो एक अभिवादन होने के नाते एक तैयारी या अहसास प्रदान करते हैं।

यही वह पृष्ठभूमि है जिसके अनुसार हमें यहूदा की शेष पुस्तक को समझना है। और इसमें तीन तत्वों के संदर्भ में पृष्ठभूमि शामिल है। सबसे पहले, लेखक की पृष्ठभूमि।

उसकी पहचान जूड है और वह खुद को रिश्तों के संदर्भ में बताता है। वह कहता है कि वह यीशु मसीह का सेवक और जेम्स का भाई है। फिर प्राप्तकर्ताओं के संदर्भ में उनका वर्णन तीन प्रकार से किया जाता है।

उनका कहना है कि उन्हें बुलाया जाता है। जिन्हें बुलाया गया है, उन्हें परमपिता परमेश्वर में प्रिय, प्रिय के रूप में वर्णित किया गया है, और उन्हें यीशु मसीह के लिए रखे गए के रूप में वर्णित किया गया है। और फिर, उचित अभिवादन के संदर्भ में, दया, शांति और प्रेम आप पर बढ़े।

फिर से, हम इसके संबंध में प्रश्न उठाना चाहते हैं कि इस अनुच्छेद का प्रत्येक मुख्य घटक, लेखक, प्राप्तकर्ताओं और मोक्ष के संबंध में वह विशेष रूप से क्या कहता है, श्लोक तीन से 24

के लिए तैयारी करता है और शेष पुस्तक पर प्रकाश डालता है। . जूड ने इस पुस्तक को ठीक उसी तरह से क्यों पेश किया है जैसे उसने किया है? और निश्चित और तर्कसंगत प्रश्न के उत्तर के निहितार्थ, धार्मिक निहितार्थ क्या हैं? फिर, हम यह भी जानते हैं, जैसा कि हमने उल्लेख किया है, मैंने यहां पहले ही सुझाव दिया है कि छंद तीन और चार में एक सामान्य कथन हो सकता है, यानी, पुस्तक का सिरा वास्तव में पुस्तक के सामान्य कथन के संदेश को समाहित करता है, जो वह जाता है आगे और बाकी किताब में विशेष विवरण दिया गया है। अब, आपके पास वास्तव में, सामान्य कथन के भीतर ही, एक पुष्टिकरण है। वह कहता है कि मैं आपसे अपील करने के लिए, उस विश्वास के लिए संघर्ष करने के लिए लिख रहा हूं जो संतों को एक बार दिया गया था क्योंकि प्रवेश गुप्त रूप से कुछ लोगों द्वारा प्राप्त किया गया है जो बहुत पहले इस निंदा के लिए नामित किए गए थे, मुझे क्षमा करें, अधर्मी व्यक्ति जो इसे विकृत करते हैं हमारे परमेश्वर की कृपा को लंपटता में बदल दो और हमारे एकमात्र स्वामी और प्रभु यीशु मसीह का इन्कार करो।

तो, आपके पास वास्तव में सामान्य कथन के भीतर एक पुष्टिकरण है। मैं यह क्यों कहता हूं कि आपको उस विश्वास के लिए संघर्ष करना चाहिए जो एक बार और सभी के लिए संतों को सौंप दिया गया था, क्योंकि प्रवेश गुप्त रूप से अधर्मी व्यक्तियों द्वारा प्राप्त किया गया है जिन्हें इस निंदा के लिए नामित किया गया था। और यह सटीक है कि सामान्य कथन और उस सामान्य कथन का विशिष्टीकरण, जिसे विशिष्ट किया गया है, विकसित किया गया है, छंद पांच से सोलह में खोला गया है, और वह चिस्टिक सहयोगी है।

तो, वह इन अधर्मी व्यक्तियों के वर्णन से शुरू करते हैं। वह दोनों अधर्मी व्यक्तियों, उनकी अधर्मीता, और उनकी निंदा पर विशेष रूप से चर्चा करके शुरुआत करता है। वैसे, सामान्य बयान में, ध्यान दें कि वह कहते हैं, किसे नामित किया गया था, जिन्हें बहुत पहले इस निंदा के लिए नामित किया गया था।

तो, एक बार फिर, वह भी सामान्य है। उनका कहना है कि उन्हें बहुत पहले ही नामित किया गया था, और निश्चित रूप से, यह विशेष रूप से तब होता है जब वह उन मॉडलों या उदाहरणों के बारे में बात करते हैं जो हिब्रू धर्मग्रंथों में बहुत पहले प्रस्तुत किए गए थे और उन भविष्यवाणियों के बारे में जो पहले अधर्मियों पर फैसले के संबंध में प्रस्तुत की गई थीं। तो, यह बिल्कुल स्पष्ट है कि वह अधर्मी व्यक्तियों और उनकी निंदा के इस सामान्य विवरण को विशिष्ट बनाता है, खोलता है और निर्दिष्ट करता है, जिसे बहुत पहले यहां पांच से सोलह श्लोकों में निर्दिष्ट किया गया था, और फिर सत्रह से इक्कीसवें श्लोक में, वह विशेष रूप से विशिष्ट करता है कि वह क्या करता है इसका अर्थ है उस विश्वास के लिए संघर्ष करना जो एक ही बार संतों को प्रदान किया गया था।

यदि आप इस अनुच्छेद पर उपदेश देने या पढ़ाने जा रहे हैं, जो निश्चित रूप से, शायद यहूदा की पुस्तक में सबसे परिचित छंदों में से एक है, तो उस विश्वास के लिए संघर्ष करना जो एक बार संतों को दिया गया था, बहुत महत्वपूर्ण होगा विशिष्टीकरण के प्रकाश में इसकी व्याख्या करने के लिए, जिस तरह से वह सत्रह से इक्कीसवें छंदों में संतों को एक बार दिए गए विश्वास के लिए संघर्ष करने के इस व्यवसाय का विस्तार करता है। यह विशिष्ट सामग्री प्रदान करता है, उस विश्वास के लिए संघर्ष करने में क्या शामिल है जो एक बार संतों को दिया गया था। और फिर, निःसंदेह, हम आगे बढ़ते हैं और इस संबंध में प्रश्न उठाते हैं।

श्लोक तीन और चार में प्रमुख तत्वों का क्या अर्थ है, और उनमें से प्रत्येक को पुस्तक के शेष भाग में कैसे वर्णित या विकसित किया गया है? अधिक विशेष रूप से, आस्था के लिए संघर्ष करने की अपील आदि का संदर्भ, सत्रह से तेईसवें छंदों में पाठकों को उपदेशों पर कैसे प्रकाश डालता है? मेरा मतलब है, आखिरकार, वह आगे बढ़कर सत्रह से तेईसवीं आयतों में जो कहेगा उसमें वास्तव में वही शामिल है जो उसने विश्वास के लिए दावेदारी के रूप में यहाँ कहा था। यह समझ कि इसमें उस विश्वास के लिए संघर्ष करना शामिल है जो एक बार संतों को दिया गया था, सत्रह से तेईस तक छंदों के अर्थ को कैसे उजागर करता है? और श्लोक चार में इस अपील के लिए दिया गया कारण, मान लीजिए कि इन अधर्मी व्यक्तियों के परिचय के कारण, पुस्तक के शेष भाग को कैसे प्रकाशित करता है, विशेष रूप से छंद पांच से सोलह तक उपद्रवियों का वर्णन? एक ओर संतों को एक बार दिया गया विश्वास और दूसरी ओर इस निंदा के लिए नामित लोगों की अधर्मिता के बीच अंतर का क्या अर्थ है? वास्तव में अंतर क्या है? इन मतभेदों का क्या अर्थ है? उस विश्वास के बीच अंतर का क्या महत्व है जो एक बार संतों को दिया गया था और यहां की अधर्मिता? वैसे, मैं सिर्फ इतना कहना चाहता हूँ कि हम इस बिंदु पर इन सवालों का जवाब नहीं देते हैं, लेकिन एक बात यह है कि, एक बार जब आप व्याख्या कर लेते हैं और इस सवाल का जवाब देना शुरू कर देते हैं, तो यह देखना शुरू कर देते हैं कि विश्वास का यह पूरा कारोबार एक समय के लिए था। संतों को दी गई सारी बातें रूढ़िवादिता जितना रूढ़िवादिता का मामला नहीं हो सकता है। क्योंकि वह जो करता है वह उस विश्वास की तुलना करना है जो एक बार संतों को दिया गया था, झूठे सिद्धांत के साथ नहीं बल्कि झूठे जीवन के साथ, एक अधर्मी जीवन शैली के साथ।

फिर, पुस्तक के शेष भाग में ये अंतर कैसे विकसित हुए हैं? यहां, हम विशिष्टता पर ध्यान दे रहे हैं। और वे समग्र रूप से पुस्तक के संदेश को कैसे सूचित करते हैं? चियास्म पाठकों की ज़िम्मेदारी और उपद्रवियों के चरित्र के बीच संबंधों का समर्थन और रोशनी कैसे करता है? अब, मैंने चियास्म के संबंध में इसका उल्लेख नहीं किया है, लेकिन मुझे यह कहना चाहिए कि चियास्म का एक कार्य यह है कि यह आम तौर पर सुझाव देता है कि सबसे महत्वपूर्ण चीज ए और ए प्राइम है। इसलिए, जब आपके पास ए, बी जैसा चियास्म होता है, जैसा कि आपके यहां है, बी, ए, तो चियास्म का एक उद्देश्य यह इंगित करना है कि ए और ए प्राइम वास्तव में सबसे महत्वपूर्ण चीज हैं और बी और बी प्राइम प्रवृत्त होते हैं। अपेक्षाकृत गौण होना।

यदि ऐसा मामला है, तो विश्वास के लिए संघर्ष करने का यह व्यवसाय और उपदेश और वास्तव में विश्वास के लिए इस संघर्ष की विशिष्टताएं, पुस्तक के अंत में हमारे पास जो उपदेश हैं, वह वास्तव में प्राथमिक चिंता का विषय है। निःसंदेह, यह बिल्कुल वही है जिसकी आप अपेक्षा करेंगे। वह यह पुस्तक अधर्मियों के लिए नहीं लिख रहा है।

वह उन्हें ईश्वरीयों के लिए लिख रहा है। इसलिए, वह वास्तव में पाठकों को उस विश्वास के लिए संघर्ष करने के लिए प्रोत्साहित कर रहा है जो एक बार संतों को दिया गया था। और यह सबसे महत्वपूर्ण बात है, जो इस तथ्य से पता चलता है कि चियास्म में वह इससे शुरू करता है और वह इसके साथ समाप्त होता है।

फिर, तर्कसंगत प्रश्न यह है कि लेखक ने अपील और अपील के कारण के इस विवरण के साथ पुस्तक की शुरुआत क्यों की? उन्होंने इस पर इस तरह से चर्चा क्यों की? उन्होंने इन शब्दों का प्रयोग क्यों किया? और उसने इन दो तत्वों को क्यों विकसित किया, अपील और अपील का कारण, यानी, अधर्मी और उनका निर्णय, जैसा कि उसने बाकी किताब में किया था? उन्होंने संतों को दिए गए विश्वास और निंदा के लिए नामित लोगों की अधर्मिता के बीच अंतर से निपटने का विकल्प क्यों चुना जैसा कि उन्होंने किया था? इस प्रकार उन्होंने इस चिआस्म द्वारा पाठकों की ज़िम्मेदारियों और उपद्रवियों के चरित्र के बीच संबंधों का समर्थन और प्रकाश क्यों किया? और फिर, इन सभी प्रश्नों के उत्तरों के निहितार्थ, संपूर्ण धार्मिक निहितार्थ क्या हैं? अब, इससे परे, हम यहां ध्यान देते हैं कि पुस्तक के मुख्य भाग में विरोधाभास के साथ हमारे पास एक प्रकार का कारण हो सकता है। और यहाँ मैं विशेष रूप से श्लोक 5 से 23 का उल्लेख कर रहा हूँ।

आप ध्यान दें कि यहाँ सूचक से अनिवार्य की ओर गति है। क्या है से लेकर आपको क्या करना चाहिए तक। क्योंकि, दूसरे शब्दों में, उपद्रवियों की।

उनके चरित्र के कारण, पूरी तरह से दुष्ट, और वैसे, उस प्रकार की बुराई भी जो आपको अपनी ओर, अपनी कक्षा में खींचना चाहती है। ऐसा मामला नहीं है कि वे वहाँ अपने बुरे काम कर रहे हैं। नहीं, वे इसे आपके बीच में करते हैं।

और यह बुराई दूषित करने वाली है। यह बुराई के चरित्र का, उनकी बुराई का हिस्सा है, जैसा कि उन्होंने श्लोक 5 से 16 में इसका वर्णन किया है। इस चरित्र के पूरी तरह से और दूषित, दूषित होने के कारण, यह एक शब्द है, बुराई।

और उस प्रकार की बुराई पर जो परिणाम आता है, उसकी वजह से, क्योंकि उनकी बुराई का चरित्र और उस बुराई का परिणाम, उस बुराई का निर्णयात्मक परिणाम, इसलिए, आपको इस पर इस तरह प्रतिक्रिया देनी चाहिए। आदेशात्मक, सूचक, आदेशात्मक, वाचिक, कारणकारण सहित। परिणामस्वरूप, पाठकों को धर्मी बनने और दूसरों को धर्मी बनने में मदद करने, उनसे पूरी तरह से अलग होने का उपदेश दिया जाता है।

इसलिये, इसलिये, उनसे पूर्णतया भिन्न हो जाइये। इसलिए, आपके पास कारण और विरोधाभास दोनों हैं। और हम फिर से इसको लेकर सवाल उठाते हैं।

निश्चित से शुरू करते हुए, किस प्रकार के प्रश्न का अर्थ क्या है, इन उपद्रवियों का वर्णन कैसे किया जाता है? यहाँ वास्तव में उनका वर्णन किस प्रकार किया गया है? और इस विवरण का सटीक अर्थ क्या है? इस आंदोलन में शामिल प्रमुख तत्व क्या हैं, उनकी बुराई से लेकर भगवान के फैसले तक, जिसकी वे उम्मीद कर सकते हैं? और इनमें से प्रत्येक प्रमुख तत्व का क्या अर्थ है? इन उपद्रवियों का वर्णन किस प्रकार इन उपदेशों की ओर ले जाता है, इनका कारण बनता है या इन्हें उत्पन्न करता है? एक ओर इन उपद्रवियों के वर्णन और दूसरी ओर लेखक अपने पाठकों को जिस प्रकार का जीवन जीने के लिए प्रोत्साहित करता है, उनके बीच प्रमुख अंतर क्या हैं? और इन मतभेदों का सटीक और विशिष्ट अर्थ क्या है? आप ध्यान दें कि हम यहां कारण और विरोधाभास दोनों पर विचार कर रहे हैं। और फिर तर्कसंगत प्रश्न यह है कि, इस पत्र के अनुसार,

ये उपद्रवी इतने पूर्णतया दुष्ट क्यों थे? वैसे, यह एक प्रकार के तर्कसंगत प्रश्न की ओर इशारा करता है। तर्कसंगत प्रश्न मूलतः दो प्रकार के होते हैं।

एक प्रकार का तर्कसंगत प्रश्न लेखक द्वारा कुछ लिखने के कारण या उद्देश्य पर आधारित होता है। यहूदा यह बात क्यों बताना चाहता था? उन्होंने ऐसा क्यों लिखा? उन्होंने इस बात पर जोर क्यों दिया? लेकिन आपके पास जो लिखा गया है उसके तर्क की ओर निर्देशित एक तर्कसंगत प्रश्न भी हो सकता है। वह इन व्यक्तियों को दुष्ट बताते हैं।

और इसलिए, यह एक प्रश्न उठाता है कि, इस पत्र के अनुसार, ये उपद्रवी इतने दुष्ट क्यों थे? पत्र के तर्क के अनुसार, वे इस तरह क्यों थे? इस पत्री के अनुसार, परमेश्वर ने उन पर इस प्रकार का न्याय लाने का निर्णय क्यों लिया? उनके पाप, उनकी अधार्मिकता और परमेश्वर के न्याय के बीच उसका यही कारण था। परमेश्वर ने उन पर इस प्रकार का न्याय लाने का निर्णय क्यों लिया? लेखक, अब यहां उन तर्कसंगत प्रश्नों पर क्यों आया जो लेखक के उद्देश्य से संबंधित हैं, लेखक ने इन उपद्रवियों का इस प्रकार वर्णन क्यों किया, और वह पाप और न्याय के बीच इस कारण संबंध को प्रस्तुत करना और जोर देना क्यों चाहता था कि उसके पास है? लेखक ने उपद्रवियों के इस विरोधाभासी वर्णन के साथ पाठकों को अपने उपदेशों का समर्थन क्यों किया? और फिर, इन निश्चित और तर्कसंगत प्रश्नों के उत्तर के पूर्ण धार्मिक निहितार्थ क्या हैं? अब, फिर से, हम इस बिंदु पर आवश्यक रूप से इन प्रश्नों का उत्तर नहीं देते हैं, हालाँकि जूडिथ इतना छोटा है कि आप सीधे व्याख्या चरण में जा सकते हैं, लेकिन इस स्तर पर, हम केवल अवलोकन कर रहे हैं और प्रश्न उठा रहे हैं जो तब काम आएगा व्याख्या के लिए एक पुल। अब, हमने उल्लेख किया है कि हमारे पास यहां एक निष्कर्ष है, श्लोक 24 में एक ऐतिहासिक निष्कर्ष जो वास्तव में एक स्तुतिगान के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

बस हमें याद दिलाएं कि हमारे पास यहां क्या है, "... अब जो तुम्हें गिरने से बचा सकता है, और आनन्द के साथ अपनी महिमा की उपस्थिति के सामने तुम्हें बेदाग पेश कर सकता है, यीशु मसीह के माध्यम से हमारे एकमात्र उद्धारकर्ता परमेश्वर के पास हमारे भगवान, महिमा, ऐश्वर्य, प्रभुत्व, और अधिकार सर्वदा, और अभी और हमेशा बने रहें।" श्लोक 5 से 23 में हमने जो देखा है वह ईसाई जीवन के लिए खतरों या धमकियों और धर्मी जीवन जीने के उपदेशों का वर्णन है, जिसे वास्तव में श्लोक 24 से 25 द्वारा प्रमाणित किया जा सकता है। श्लोक 24 और 25 इसका कारण हो सकते हैं वह श्लोक 5 से 23 में कहते हैं।

छंद 24 और 25 में, हमारे पास विश्वासियों को सुरक्षित रखने की दैवीय शक्ति का आश्वासन है, "... अब जो तुम्हें गिरने से बचाने में सक्षम है, और तुम्हें अपनी महिमा की उपस्थिति के सामने आनंद, आश्वासन के साथ बिना किसी दोष के प्रस्तुत करने में सक्षम है।" विश्वासियों को जीवन भर धर्मी बनाए रखने की दैवीय शक्ति, यहाँ तक कि ईश्वर के न्याय आसन तक, और ईश्वर की गौरवशाली बचाने वाली शक्ति के कारण ईश्वर की स्तुति।" दूसरे शब्दों में, यहाँ आपके पास मसीह में ईश्वर की बचाने और संरक्षित करने की शक्ति है जो वास्तव में धार्मिक जीवन के बारे में उपदेशों को पूरा करने की संभावना का साधन है। उन्होंने उनसे संतों को एक बार सौंपे गए विश्वास के लिए संघर्ष करने का आग्रह किया है। उन्होंने उनसे प्रेरितों की भविष्यवाणियों को याद रखने का आग्रह किया है।

उन्होंने उनसे अपने सबसे पवित्र विश्वास में खुद को विकसित करने, पवित्र आत्मा में प्रार्थना करने, खुद को ईश्वर के प्रेम में बनाए रखने, अनंत जीवन के लिए हमारे प्रभु यीशु मसीह की दया की प्रतीक्षा करने, संदेह करने वाले कुछ लोगों को समझाने का आग्रह किया है। कितनों को आग में से झपट कर बचाऊं, कितनों पर भय के साथ दया करूं, और शरीर पर दाग लगे वस्त्र से भी घृणा करूं। यहां, श्लोक 24 और 25 इंगित करते हैं कि वे मसीह में परमेश्वर की बचाने और संरक्षित करने की शक्ति के कारण ऐसा करने में सक्षम हैं। इस वजह से वे ऐसा करने में सक्षम हैं, और यह एक पुष्टि है।

इसके जरिए वे ऐसा करने में सक्षम हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि, यह मसीह में ईश्वर की बचाने वाली और संरक्षित करने वाली शक्ति है, जो श्लोक 3 और श्लोक 24 और 25 दोनों में धार्मिक जीवन के बारे में उनके उपदेशों को पूरा करने का साधन है। अब, यह धार्मिक रूप से काफी महत्वपूर्ण है क्योंकि यह वास्तव में सुझाव देता है कि अपनी मानवीय शक्ति के आधार पर, वे वास्तव में इस कार्य के लिए बिल्कुल भी सक्षम नहीं हैं, इन अधर्मी व्यक्तियों को उचित और सहायक तरीके से जवाब देने में बिल्कुल भी सक्षम नहीं हैं जिन्होंने अपना रास्ता खोज लिया है। उनके बीच में रहो, कि जो उपदेश यहूदा ने उन्हें दिया है उसे पूरा करो।

वे ऐसा नहीं कर सकते। लेकिन भगवान और उनके मसीह इन पाठकों को उपदेशों को पूरा करने और उनके बीच में इन अधर्मी व्यक्तियों द्वारा उत्पन्न खतरों पर पूरी तरह से काबू पाने के लिए सक्षम करने में सक्षम हैं। अब, हम फिर से इन निश्चित प्रश्नों के संबंध में प्रश्न उठाना चाहते हैं।

छंद 24 से 25 किस प्रकार विशेष रूप से और सटीकता से ईसाई जीवन के खतरों के वर्णन के लिए समर्थन या कारण प्रदान करते हैं, जिसमें चर्च में अधर्मी लोगों पर निर्णय और धर्मी जीवन जीने के लिए उपदेश शामिल हैं? वैसे, श्लोक 24 और 25 भी इस पत्र में अधर्मियों पर फैसले की पुष्टि करते हैं क्योंकि वह यहां सुझाव दे रहे हैं कि अधर्मियों को अधर्मी होने की ज़रूरत नहीं है। कहने का तात्पर्य यह है कि, उनकी अधार्मिकता वास्तव में अनुग्रह का अपमान है, अस्वीकृति का अपमान है, और दैवीय शक्ति का खंडन है जो उन्हें अलग-अलग जीवन जीने के लिए, अधर्म से ऊपर जीवन जीने के लिए भी उपलब्ध है। ताकि दैवीय शक्ति, दैवीय संसाधन, वास्तव में पाप पर निर्णय का आधार हो।

तो, फिर से, छंद 24 और 25, और विशेष रूप से मोक्ष में भगवान की गौरवशाली शक्ति की स्तुति-संबंधी पुष्टि, पुस्तक को चरमोत्कर्ष पर कैसे लाती है और पूरी पुस्तक को रोशन करती है? तर्कसंगत प्रश्न क्यों उठाए गए, लेखक ने विश्वासियों को संरक्षित करने के लिए दैवीय शक्ति के इस आश्वासन और अपनी शानदार बचत और संरक्षण शक्ति के कारण ईश्वर की स्तुति के इस आश्वासन के साथ छंद 5 से 23 में अपने विवरण और उपदेशों का समर्थन या समर्थन क्यों किया, भले ही यह मामला है, भले ही यह सच है कि उसे यह कहने की ज़रूरत नहीं थी? वास्तव में उसके लिए यह कहना और इस तरह से कहना क्यों महत्वपूर्ण था? इस प्रकार उन्होंने पुस्तक में उपदेश को पूरा करने के साधन के रूप में इस दिव्य शक्ति पर जोर क्यों दिया? और, फिर, इसके क्या निहितार्थ हैं? अब, निःसंदेह, हमारे यहाँ पुस्तक में विरोधाभास की पुनरावृत्ति भी है। और ध्यान दें कि अधिकांश पुस्तकों में आपके पास तीन से छह या सात प्रमुख संरचनात्मक संबंध

हैं, और यही हम यहां पा रहे हैं। लेकिन आप देखेंगे कि पाठकों और परेशान करने वालों के बीच जीवनी संबंधी विरोधाभास की पुनरावृत्ति होती है।

श्लोक 3 और 20 में पाठकों को पवित्र बताया गया है, जबकि श्लोक 4, 15 और 18 में उपद्रवियों को अधर्मी बताया गया है। श्लोक 2, 21, 23 में पाठक दया का अनुभव करते हैं या उसका इंतजार करते हैं, जबकि उपद्रव करने वाले न्याय का अनुभव करते हैं या न्याय का इंतजार करते हैं।, श्लोक 4 से 16। श्लोक 24 में पाठकों को बेदाग बताया गया है, जबकि श्लोक 8, 12 और 23 में परेशान करने वालों को अपवित्र और दागदार बताया गया है।

श्लोक 20 में पाठकों को आत्मा में प्रार्थना करने के लिए वर्णित किया गया है या उनसे अपेक्षा की जाती है। श्लोक 19 में परेशान करने वालों को आत्मा से रहित बताया गया है। पाठक ईश्वर के सामने खड़े होते हैं, श्लोक ईश्वर के सामने खड़े होंगे, श्लोक 24।

परेशान करने वाले लड़खड़ा जाते हैं या गिर जाते हैं, श्लोक 6। पाठक बच जाते हैं, यही उनकी भाषा है, श्लोक 3 और 25। परेशान करने वाले नष्ट हो जाते हैं, साथ ही उनकी भाषा, श्लोक 5, 7, 10, 11, 13, और 15। और यहाँ मैं इस विरोधाभास के संबंध में, पाठकों और परेशान करने वालों के बीच बार-बार होने वाले विरोधाभास, प्रस्तावना और निष्कर्ष की भूमिका पर ध्यान दूंगा।

ध्यान दें कि परिचय पाठकों के प्रति बहुत सकारात्मक है। जो बुलाए गए हैं, परमपिता परमेश्वर में प्रिय हैं और यीशु मसीह के लिए सुरक्षित हैं, उन पर दया, शांति और प्रेम बहुतायत से हो। और निष्कर्ष भी पाठकों के प्रति काफी सकारात्मक है।

उसके लिए जो आपको गिरने से बचाने में सक्षम है और आपको अपनी महिमा की उपस्थिति के सामने बिना किसी दोष के आनंद के साथ प्रस्तुत करने में सक्षम है, वगैरह-वगैरह। जबकि श्लोक 23 से 23 में, आपके पास विरोधियों का नकारात्मक वर्णन है। मैं रखे गए शब्द की भूमिका पर भी ध्यान दूंगा।

ग्रीक में एक ही शब्द पूरे टेरेल में प्रयोग किया जाता है। यहां रखे गए शब्द पर ध्यान दें कि आपके पास रखे गए शब्द की पुनरावृत्ति कैसे होती है, एक, दो, तीन, चार, पांच, छह बार इस्तेमाल किया गया, एक श्लोक में दो बार, छंद छह। लेकिन पूरी किताब में भूमिका बरकरार रखी गई है।

ध्यान दें कि पाठकों के बारे में कहा जाता है कि उन्हें भगवान ने मोक्ष के लिए और स्वयं को बनाए रखने के लिए रखा है। जबकि उपद्रवियों को परमेश्वर ने दण्ड के लिये रखा है, और उन्होंने अपने आप को नहीं रखा है। इसलिए, रखा का उपयोग वास्तव में इस तरह से किया जाता है कि अंतर पर जोर दिया जा सके।

पाठकों को एक चीज के लिए रखा जाता है या खुद को एक चीज के लिए रखा जाता है। अधर्मियों को किसी और चीज़ के लिए रखा जाता है और वे अपने आप को नहीं रखते। तो, यहाँ शब्द रखना बहुत-बहुत महत्वपूर्ण है।

और फिर, हम इस संबंध में निश्चित, तर्कसंगत और निहितार्थ प्रश्न उठाते हैं। इन प्रमुख अंतरों में से प्रत्येक का और अन्य का विशिष्ट अर्थ क्या है जिन्हें पाठकों और परेशान करने वालों के बीच अभी भी पहचाना जा सकता है? या शायद हमें अधर्मी कहना चाहिए क्योंकि यही वह शब्द है जिसका उपयोग वह उनका वर्णन करने के लिए करता है। ये प्रमुख अंतर एक दूसरे से कैसे संबंधित हैं? और वे एक दूसरे को कैसे रोशन करते हैं? मुख्य भाग और रखे गए विषय के संबंध में परिचय और परिचय निष्कर्ष की भूमिका पाठकों और परेशान करने वालों के बीच अंतर को कैसे योगदान देती है और उजागर करती है? तो, वे सभी निश्चित प्रश्न हैं।

और तर्कसंगत प्रश्न यह है कि, जूड की पुस्तक के तर्क के अनुसार, पाठकों और परेशान करने वालों के बीच ये मतभेद क्यों मौजूद थे? आपने इन मतभेदों का वर्णन और विकास क्यों किया जैसा उन्होंने किया? और निश्चित एवं तर्कसंगत प्रश्नों के उत्तरों के पूर्ण धार्मिक निहितार्थ क्या हैं? और फिर, हालाँकि, हमारे पास तुलना की पुनरावृत्ति भी है। बुराई, दुष्टों या उपद्रवियों के अतीत के वर्णन की तुलना उपद्रवियों की वर्तमान घटना से बार-बार की जाती है। और इसका संकेत इनके बार-बार उपयोग से मिलता है या ये हैं।

तो, ध्यान दें कि आपके पास श्लोक पाँच से सात में पिछला विवरण है। अब, मैं तुम्हें याद दिलाना चाहता हूँ, यद्यपि तुम्हें एक बार पूरी तरह से सूचित किया गया था, कि जिसने मिस्र देश से लोगों को बचाया, उसने बाद में उन लोगों को नष्ट कर दिया जो विश्वास नहीं करते थे। और जिन स्वर्गदूतों ने अपना स्थान बरकरार नहीं रखा, बल्कि अपना उचित निवास छोड़ दिया, उन्हें महान दिन के फैसले तक अनंत काल की जंजीरों में उसके द्वारा रखा गया है।

जिस तरह सदोम और अमोरा और आसपास के शहर, जो इसी तरह अनैतिक काम करते थे और अप्राकृतिक वासना में लिप्त थे, अनन्त अग्नि की सजा भुगत कर एक उदाहरण के रूप में काम करते हैं, फिर भी उसी तरह, ये लोग, ये आपके बीच में वर्तमान लोग हैं। उसी प्रकार ये मनुष्य अपने स्वप्नों में शरीर को अशुद्ध करते हैं, अधिकार को अस्वीकार करते हैं, और महिमामय लोगों की निन्दा करते हैं। इसलिए, वह समान तरीके से तुलना के माध्यम से अतीत के विवरण से वर्तमान घटना की ओर बढ़ता है। ध्यान दें कि वह श्लोक नौ और दस में भी यही काम करता है।

शुरुआत अतीत के वर्णन से होती है। परन्तु जब प्रधान स्वर्गदूत मीकाईल ने शैतान से लड़ते हुए मूसा की लोथ के विषय में विवाद किया, तब उस ने उसे निन्दा करने का निश्चय न किया, परन्तु कहा, यहोवा तुझे डांटे। अब, वर्तमान घटनाएँ।

लेकिन ये लोग, या ये वे लोग हैं, जो जो कुछ भी नहीं समझते हैं, उसकी निन्दा करते हैं, और उन चीजों के द्वारा जो वे विवेकहीन जानवरों की तरह सहज ज्ञान से जानते हैं, नष्ट हो जाते हैं। फिर, पद 11. उन पर हाय, क्योंकि वे कैन के मार्ग पर चलते हैं, और कैन के कारण अपने आप को बिलाम की सी भूल के कारण त्याग देते हैं, और कोरह के विद्रोह में नष्ट हो जाते हैं।

वह पिछला विवरण है। अब, वर्तमान घटना से तुलना करें। ये हैं, ये वे हैं जो आपके प्रेम भोज पर दोष हैं, क्योंकि वे साहसपूर्वक एक साथ घूमते हैं, खुद की देखभाल करते हैं, हवाओं द्वारा उड़ाए गए जलहीन बादल, देर से शरद ऋतु में फलहीन पेड़, दो बार मृत, उखाड़ दिए गए।

और पद 14 में वह वही काम करता है। इन्हीं में से आदम से सातवीं पीढ़ी में हनोक ने यह भविष्यद्वाणी की, कि देखो, प्रभु अपने पवित्र असंख्यों के साथ सब का न्याय करने, और सब दुष्टों को दोषी ठहराने के लिये आया है। उनके अधर्म के काम, जो उन्होंने ऐसे अधर्मी तरीके से किए, और सभी कठोर बातें जो अधर्मी पापियों ने उसके विरुद्ध कही हैं। देखो, वह अतीत है।

अब, हम इस घटना को तुलना के माध्यम से प्रस्तुत करते हैं। ये बड़बड़ाने वाले, असंतुष्ट, अपने ही शौक पूरे करने वाले, जोर से बोलने वाले और फायदा पाने के लिए लोगों की चापलूसी करने वाले होते हैं। और वह अंततः इसे श्लोक 17 और 18 में करता है।

परन्तु हे प्रियों, तुम्हें हमारे प्रभु यीशु मसीह के प्रेरितों की भविष्यवाणियाँ याद रखनी चाहिए। उन्होंने तुम से कहा, अन्तिम समय में ठट्ठा करनेवाले अपनी दुष्ट अभिलाषाओं के अनुसार होंगे। अब, श्लोक 19, वह अतीत का वर्णन है।

अब, वर्तमान घटनाएँ। ये ही हैं जो विभाजन स्थापित करते हैं, आत्मा से रहित सांसारिक लोग, वगैरह-वगैरह। इसलिए, दुष्ट यात्रियों के अतीत के वर्णन की तुलना बार-बार उनके बीच में मौजूद इन अधर्मियों की वर्तमान घटनाओं से की जाती है।

और हम फिर से इसको लेकर सवाल उठाते हैं। अतीत के विवरणों और वर्तमान घटनाओं के बीच समानता के विशिष्ट बिंदु क्या हैं? और समानता के इन प्रत्येक बिंदु का क्या अर्थ है? समानता के ये बिंदु इन अधर्मी लोगों के चरित्र को कैसे उजागर करते हैं, यानी, वर्तमान में आपके बीच में हैं? समानता के ये अलग-अलग बिंदु एक-दूसरे से कैसे संबंधित हैं, और वे एक-दूसरे को कैसे रोशन करते हैं? तर्कसंगत प्रश्न. ये अधर्मी पिछले विवरणों के इन तरीकों से इतने समान क्यों थे? आपने इस प्रकार इन समानताओं को क्यों प्रस्तुत किया और उन पर जोर दिया, और इसके निहितार्थ क्या हैं? और फिर, निश्चित रूप से, हम प्रमुख बनाम या रणनीतिक क्षेत्रों की पहचान करते हैं जो हमारे द्वारा पहचाने गए प्रमुख संबंधों का प्रतिनिधित्व करते हैं।

श्लोक तीन और चार, निश्चित रूप से, पुष्टि और विरोधाभास के साथ विशिष्टता का प्रतिनिधित्व करते हैं, जैसा कि हमने देखा। और श्लोक पाँच, 17 से 20, और 23 औचित्य की पुनरावृत्ति के साथ कारण और विरोधाभास का प्रतिनिधित्व करते हैं और विरोधाभास की पुनरावृत्ति और तुलना की पुनरावृत्ति का प्रतिनिधित्व करते हैं। छंद 24 और 25 उपकरण के साथ पुष्टि का प्रतिनिधित्व करेंगे और छंद एक और दो तैयारी बोध का प्रतिनिधित्व करेंगे।

इसलिए पत्री में से, हम देखते हैं कि ये सबसे महत्वपूर्ण, प्रमुख छंद हैं। और फिर उच्चतर महत्वपूर्ण डेटा, केवल पुस्तक के आधार पर। लेखक अपनी पहचान जेम्स के भाई जूड के रूप में बताता है।

जाहिरा तौर पर वह पुराने नियम और अपोक्रीफ़ल और छद्मलेखीय लेखन से पूरी तरह परिचित थे। इसलिए हो सकता है कि वह यहूदी रहा हो और विशेष रूप से यहूदी सर्वनाशवाद से परिचित हो। प्राप्तकर्ता आस्तिक थे, इससे यह स्पष्ट होता है कि वे बड़े पैमाने पर ईश्वर की धार्मिकता का अनुसरण कर रहे थे।

वह उसे बुलाए जाने, प्रिय होने के रूप में वर्णित करता है। वह ईश्वर को हमारा ईश्वर, हमारा स्वामी यीशु मसीह बताता है। वह हमारे सामान्य उद्धार और आपको गिरने से बचाने के लिए ईश्वर की शक्ति के बारे में बात करता है।

लेकिन वे चर्च में अधर्मी लोगों द्वारा परेशान और उत्पीड़ित थे। उनका पाठक के साथ, लेखक के साथ, स्पष्ट रूप से, छंद तीन और पांच के अनुसार पूर्व संपर्क था, और प्रेरितिक गवाही के तहत परिवर्तित या पोषित हो गए थे। हे प्रियों, हमारे प्रभु यीशु मसीह के प्रेरितों की भविष्यवाणियों को स्मरण करो, कि उन्होंने तुम से क्या कहा था, वह कहता है।

यह अवसर सामान्य मुक्ति के बारे में लिखने की व्यक्तिगत इच्छा थी, लेकिन निस्संदेह, चर्च में इन अधर्मियों की उपस्थिति भी थी, और हम देखते हैं कि वह यहां उनका वर्णन कैसे करता है। साथ ही, लेखन की तिथि प्रेरितों की उम्र के कुछ समय बाद की हो सकती है। श्लोक 17, लेकिन तुम्हें याद रखना चाहिए, प्रिय, हमारे प्रभु यीशु मसीह के प्रेरितों की भविष्यवाणियाँ, प्रेरितों की सेवकाई के कुछ समय बाद, कम से कम उनमें से कुछ चर्च के पाठकों के लिए, पत्र के दोबारा पढ़ने वालों के लिए .

अन्य प्रमुख छापों के संबंध में, पुस्तक का स्वर निंदा का है, विशेष रूप से अधर्मियों के वर्णन में, लेकिन आशा और प्रोत्साहन का स्वर भी है, विशेष रूप से पाठकों के प्रति। हम ध्यान दें कि लेखक दो बार अतिरिक्त-विहित सामग्री का उल्लेख करता है, संभवतः या स्पष्ट रूप से मूसा की धारणा से और 1 हनोक से। हम ध्यान देते हैं कि श्लोक तीन और चार का सामान्य कथन इस वाक्यांश से शुरू होता है, जो आपको हमारे सामान्य उद्धार के बारे में लिखने के लिए बहुत उत्सुक है।

यह वाक्यांश पुस्तक के लिए महत्वपूर्ण हो सकता है, लेकिन इसका अर्थ वास्तव में अस्पष्ट है। इसका मतलब यह हो सकता है, यद्यपि हमारे साझे उद्धार के बारे में आपको लिखने के लिए बहुत उत्सुक होने के बावजूद, मुझे किसी और चीज़ के बारे में आपको लिखना आवश्यक लगा, इस प्रकार उसने जो वास्तव में लिखा है और जो वह मूल रूप से लिखने का इरादा रखता था, के बीच एक अंतर का संकेत देता है। कहने का तात्पर्य यह है कि, उन्होंने जो लिखा है वह हमारे सामान्य उद्धार के बारे में नहीं है, बल्कि किसी और चीज़ के बारे में है, अर्थात् विश्वास के लिए संघर्ष करने की अपील।

लेकिन इसका मतलब यह हो सकता है, क्योंकि मैं आपको हमारे सामान्य उद्धार के बारे में लिखने के लिए बहुत उत्सुक था, मैंने आपको लिखा है, मैंने आपको विश्वास के लिए संघर्ष करने की अपील करते हुए लिखा है, जो इतना विरोधाभास का विषय नहीं होगा, बल्कि एक कारण का मामला. चूँकि मैंने आपको संघर्ष करने के लिए अपील करते हुए लिखना आवश्यक समझा,

क्योंकि मैं आपको हमारे सामान्य उद्धार के बारे में लिखने के लिए उत्सुक था, इसलिए मैंने आपको विश्वास के लिए संघर्ष करने के लिए अपील करते हुए लिखना आवश्यक समझा, जो एक बार सभी के लिए सौंप दिया गया था संत, जो सुझाव देंगे कि वह वास्तव में उन्हें जो लिखता है वह हमारे सामान्य उद्धार के बारे में है। खैर, वैसे भी, वह मूलतः एक किताब है, यह जूड की किताब का एक सर्वेक्षण है जो हमारे पास है।

मुझे आशा है कि पुस्तक सर्वेक्षण के संदर्भ में हमने जिन कुछ सिद्धांतों के बारे में बात की थी, उन्हें चित्रित करने में इससे मदद मिलेगी।

यह डॉ. डेविड बोवर आगमनात्मक बाइबल अध्ययन पर अपने शिक्षण में हैं। यह सत्र 8 है, पुस्तक सर्वेक्षण, जूड।